महामारी में मनुष्य

संपादन

बिपिन तिवारी
ममता दीपक वेर्लेकर

महामारी में मनुष्य

संपादन :

बिपिन तिवारी

ममता दीपक वेर्लेकर

महामारी में मनुष्य
MAHAMARI ME MANUSHA

संपादन:
बिपिन तिवारी, ममता दीपक वेर्लेकर

ईमेल : bipin.tiwari@unigoa.ac.in

प्रकाशक:
BROADWAY PUBLISHING HOUSE
ब्रॉडवे पब्लिशिंग हाउस,
रिझवी टॉवर्स, काकुलो सर्कल,
सांतइनेज़, पणजी-गोवा-403001

© लेखकों की ओर से संपादक

संस्करण : 2023

शब्द संयोजन : रिया ग्राफिक्स, ओल्ड गोवा

आवरण : दीप च्यारी

मुद्रक :

ISBN : 978-93-94548-08-4

संपादक

बिपिन तिवारी

उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जनपद के छोटे से गांव संडौरा कला में जन्म। पिता से किसान जीवन के संस्कार मिले लेकिन पेशा पढ़ना-पढ़ाना चुना। लिहाजा गांव से लखीमपुर और वहां से दिल्ली तक के विश्वविद्यालयों में आवारगी करते हुए पढ़ाई की। इस पढ़ाई में प्रोफ़ेसरों की भूमिका कम मगर पुस्तकालयों और चाय के नुक्कड़ों की भूमिका ज़्यादा रही। साझी-संस्कृति और साहित्य में दृढ़ आस्था रखने वाले अमृतलाल नागर पर केंद्रित 'संवेद' पत्रिका के 'अमृतलाल नागर विशेषांक' का संपादन किया है। पेशे के रूप में गोवा विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं।

ममता दीपक वेर्लेकर

गोवा जैसे शांत प्रदेश में अशांत विचारों की यात्रा पर हैं। कभी उसकी तलाश में कविता लिखती हैं तो कभी किसी दूसरी आर्ट फॉर्म को अपना लेती हैं। इस बेचैनी में ही कोंकणी में 'धग' कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है। अध्ययन-अध्यापन में विशेष रुचि है। वैसे कई दूसरे आर्ट फार्मों में रियाज़ कर रही हैं। पेशे से गोवा विश्वविद्यालय में अध्यापन।

अनुक्रम

- भूमिका 7

विचारों की दुनियाँ

1. स्वामी विवेकानंद द्वारा जारी प्लेग
   मेनिफेस्टो (घोषणा पत्र) का मूल पाठ- स्वामी विवेकानंद..............17
2. जोहानिसबर्ग में प्लेग
   भारतीय समाजका महान कार्य – मोहनदास करमचंद गांधी.....19
3. ट्रान्सवाल में प्लेग – मोहनदास करमचंद गांधी.....22
4. प्लेग – मोहनदास करमचंद गांधी.....27
5. ऑरेंज रिवर उपनिवेश और प्लेग – मोहनदास करमचंद गांधी.....30
6. प्लेग से एक सबक – मोहनदास करमचंद गांधी.....32
7. भारत में प्लेग – मोहनदास करमचंद गांधी.....35
8. केसरी में प्रकाशित लोकमान्य बाल
   गंगाधर तिलक के लेख :
   ब्यूबोनिक बुखार या ग्रंथियों का बुखार
   महामारी के बुखार से बचने के लिए
   मुंबई सरकार द्वारा बनाये गये नियम
   महामारी के बुखार का प्रसार बंद करने
   हेतु नई योजना
   नयी व्यवस्था
   आजकल पूना में हो रही हलचल
   पूना की वर्तमान स्थिति 38

9. प्लेगकालीन अत्याचारों के विषय में
सुधारक पत्र में प्रकाशित कुछ लेखों
के अंश – लोकमान्य बालगंगाधर तिलक63
10. महामारी का आतंक – श्री रमेशमुनि, 'सिद्धांताचार्य'.66
11. आपबीती कहूं कि जगबीती – प्रतापनारायण मिश्र...........69
12. घर के जीव-जन्तु चूहे – पं. गणेशदत्त शर्मा गौड़ 'इंद्र'.76
13. एक वायरस, मानवता और पृथ्वी – वंदना शिवा..................80
14. महामारी, मानव और मशीन:
यह राह कहाँ जाती है? – स्कंद शुक्ल..................85

साक्षात्कार

15. पूना में प्लेग संबंधी कार्यवाही
गोपाल कृष्ण गोखले से 'मैनचेस्टर गार्डियन'
द्वारा लिए गए साक्षात्कार का एक अंश 98

दुनिया कुछ अपनी, कुछ दूसरों की

16. आगरा में प्लेग – जहाँगीर.................... 103
17. शहीद दामोदर हरी चापेकर का
आत्मवृत्त 105
18. हमारे जीवन की कुछ स्मृतियाँ
भाग 20
बीमार मनुष्य की देखभाल – श्रीमती रमाबाई रानडे 109
19. स्मृति के चित्र (कुछ स्मरणीय बातें) – लक्ष्मीबाई तिलक.......... 135
20. अर्धकथानक – बनारसीदास चतुर्वेदी 145
21. गर्दिश के दिन – हरिशंकर परसाई 147
22. पंखहीन – विष्णु प्रभाकर 151
23. आवारा मसीहा
आवारा श्रीकांत का ऐश्वर्य – विष्णु प्रभाकर 155
24. ईश्वर रे, मेरे बेचारे...! – फणीश्वरनाथ रेणु........... 162
25. रामा – महादेवी वर्मा 166

दुनिया घूमते हुए

26. हिमालय पर्वत में सम्राट की सेना – इब्न बतूता................. 182

एक खत

27. मीर मेहदी हुसेन 'मज़रूह' के नाम ग़ालिब का पत्र- पत्र संख्या 35 – ग़ालिब 184

टूटते बिखरते मनुष्य की कहानियाँ

28. रक्ताक्त मृत्यु की अन्तिम लीला – एडगर एलन पो 186
29. रेवती –फ़कीर मोहन सेनापति....... 195
30. प्लेग की चुड़ैल – मास्टर भगवानदास......... 201
31. स्वर्ग की देवी – मुंशी प्रेमचंद 217
32. नारी हृदय – सुभद्राकुमारी चौहान 228
34. वीभत्स – पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'.... 235
33. क्वारनटीन – राजिंदर सिंह बेदी 249
34. पहलवान की ढोलक – फणीश्वरनाथ रेणु........... 263
35. प्राणों में घुले हुए रंग – फणीश्वरनाथ रेणु........... 273
36. सिलसिलेवार घटनाएँ – पहाड़ी...................... 283
37. मंगता भोगी – हरीचरन प्रकाश 292
38. कोरोना से ऐन पहले – पंकज मित्र................. 319

कवि ने कहा

39. काशी में महामारी – तुलसीदास.................. 342
40. प्लेगस्तवराज – महावीरप्रसाद द्विवेदी 345
41. प्रार्थना – रामप्यारी इलाहाबाद 352

सभ्यता का इतिहास मानव अर्जित तमाम भौतिक और आत्मिक उपलब्धियों से भरा पड़ा है।ऐसा जब– जब लगा कि प्रकृति के सारे रहस्य मनुष्य की आंखों ने देख परख लिए हैं, तभी अचानक और अप्रत्याशित रूप से ऐसा कुछ किसी महामारी या दैवी आपदा के रूप में घटित हो जाता कि मनुष्य की ये समस्त उपलब्धियां निरुपाय और लाचार हो जातीं।

सभ्यता के इतिहास में, जिसे मनुष्य की जिजीविषा कहा गया है, उसका सर्वोत्तम रूप है कला। प्रकृति की चुनौतियों से जूझते हुए, उससे लड़ते हुए ही मनुष्य ने कला के अनेक रूपों को गढ़ा है। महामारी और उसकी विभीषिका के साक्षी कलाकारों ने तब भी मनुष्य के संघर्ष और जीवन के गीत गाये। साहित्यकारों ने उन मर्मान्तक अनुभवों को लिखा और उसे मनुष्यता की विजय गाथा के चिन्ह बना कर अंकित कर डाला।

ऐसे ही आज से लगभग सवा सौ साल पहले, जब 19वीं सदी खत्म हो रही थी, तब भी भारत के नगर और महानगर महामारी के रूप में फैले प्लेग की चपेट में आये थे। लोग शहरों को छोड़कर जंगलों की ओर भाग रहे थे।भूख, बदहाली और अजानी बीमारी का ख़ौफ। एक गुलाम देश अपनी दासता और उस प्लेग नुमा महामारी की नियति से कैसे – कैसे लड़ रहा था।क्या–क्या झेलना पड़ रहा था भारत को उन अंग्रेज अधिकारियों के हवाले जो पहले से ही इसकी हड्डियां तक चूस चुके थे, इस पुस्तक में उसी का ऐतिहासिक आख्यान है, और कहानी है हमारे स्वतंत्रता संघर्ष की। क्योंकि इस पुस्तक को पढ़ते हुए आपके लिए तय कर पाना मुश्किल होगा कि असली महामारी क्या थी, प्लेग या पराधीनता ?

– कथाकार देवेन्द्र

BROADWAY PUBLISHING HOUSE
ISBN: 9789394548084
9 789394 548084
₹ 999/-